Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-2 (July-Dec.) 2025 : Page No.-186-189

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No- 186-189

©2025 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

दिगंत बोरा
सहायक अध्यापक, हिंदी विभाग
जे.डी.एस.जी. महाविद्यालय,
बोकाखात.

Corresponding Author :
दिगंत बोरा
सहायक अध्यापक, हिंदी विभाग
जे.डी.एस.जी. महाविद्यालय,
बोकाखात.

असमिया समाज और संस्कृति में डाक प्रवचन

शोध सारांशिका : 'डाकर वचन वेदर वाणी'। असमिया समाज और संस्कृति में डाक प्रवचनों का महत्व वेदों की वाणी के समान है। असमिया समाज में डाक वचनों का महत्व अतुलनीय है। डाक प्रवचनों मे संपूर्ण असमिया समाज और संस्कृति का सजीव चित्रण हुआ है। असमिया समाज में प्रचलित विविध लोकविश्वास, परंपरा, रीति-रिवाजों में डाक वचनों का ही प्रभाव है। आज भी असमिया समाज और संस्कृति में डाक वचन लोकप्रिय है। उसमें केवल अंधविश्वास ही नहीं है, उनके पीछे कोई न कोई कारण भी है। डाक वचनों का प्रभाव ग्रामीण किसानों पर अधिक है। वे खेती शुरू करने से लेकर बैल की खरीदारी तक डाक वचनों पर ही निर्भर रहते हैं। डाक ने अपने वचनों में आधीदारी किसानों की दूर्दशा को भी स्थान दिया है। कह सकते हैं कि डाक वचनों में संपूर्ण असमिया समाज और संस्कृति का चित्रण हुआ है।

बीज शब्द : असमिया, संस्कृति, समाज, डाक, लोक-विश्वास, रीति-रिवाज।

प्रस्तावना : "'डाकर वचन वेदर वाणी'।[1] अजुत असमिया निरक्षर जनगणर बाबे डाकर वचन सचाकेये अलिखित वेदर वाणी आरु डाक तेउलोकर अख्यात व्यास। डाकर वचन तेउलोकर हाड़े-हिमजुए मिलि आछे । सेइबोर तेउलोकर निजर विवेक-वाणी स्वरूप"।[2] अर्थात असमिया समाज और लोगों के लिए डाक वचन वेदों की वाणी की तरह है। डाक असमिया जनमानस के लिए अख्यात व्यास है। डाक वचन असमिया लोगों की रूह तक समाया हुआ है। असम की लोक परंपरा के अनुसार डाक का जन्म बरपेटा जिला के लेहि डङरा गाँव में हुआ था।

लेहि डङरा डाकर गाँव
तिनिश षाठिटा पुखुरि पाउ।[3]

असम के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में डाक वचनों का महत्व अतुलनीय है। डाक वचनों में असमिया समाज और संस्कृति बसे हुए हैं। असम एक कृषि प्रधान राज्य है। ज्यादातर लोग कृषि पर ही निर्भरशील हैं। पानी के बिना फसल अच्छी नहीं होती है। खेतों में पानी को किस तरह से जमा रखना चाहिए, इसका वर्णन डाक के वचनों में

हुआ है। जैसे - घन घन कै दिबा आलि
तेहे पाबा नानान शालि।[4]

अश्विन महीने से बारिश की मात्रा कम हो जाती है। जिसके कारण खेती सूखने लगती है। उस समय किसान खेती में पानी जमा रखने के लिए विविध व्यवस्था करता है। जिसका वर्णन डाक के वचनों में हुआ है। डाक कहता है कि अश्विन-कार्तिक महीने में खेतों में पानी को उस तरह से जमा रखना चाहिए, जिस तरह से राजा रानी को रखता है। जैसे –

आहिन कातित रखाबा पानीक।
जेने राखे रजाई रानी।[5]

डाक कहता है कि समान रूप से धूप और बारिश आने से ही फसल अच्छी होती है। अत्यधिक बारिश आने से भी बीज नष्ट हो जाता है, तथा अत्यधिक धूप से खेती सूख जाती है। जैसे –

रद बरषुण समे जाय
तेबेसे कृषि लाभक पाय।[6]

अश्विन महीने में उड़द की दाल की खेती होती है। असमिया समाज में प्रचलित एक लोकविश्वास है कि इस समय उड़द की दाल की खेती करने से चिटी फसल को नष्ट नहीं करती है। इस लोकविश्वास को डाक ने अपने वचन भले ही स्थान न दिया हो परंतु उड़द की दाल की खेती करने के समय के बारे में अवश्य कहा है। जैसे –

भादर चारि आहिनर चारि
माह रुबा जत पारि।[7]

खेती करने के लिए खेतों में हल जुताई करना आवश्यक है। डाक अपने वचनों में कहा है। जैसे –

षोल्ल चाह मूला तार आर्धेक तुला
तार अर्धेक धान बिना चाहे पान।[8]

मूली की खेती के लिए खेतों में षोलह बार जुताई करनी आवश्यक है तो कपास की खेतों के लिए आठ बार। धान की खेती के लिए यदि चार बार तो पान की खेति के लिए खेती की जुताई करने की आवश्यकता ही नहीं है। पान की खेती करने से पान को तीन साल बाद ही बेच सकते है। जैसे –

एक शाउने धान
तिनि शाउने पान।[9]

अर्थात एक श्रावन में धान की फसल उत्पन्न होती है, परंतु पान की खेती होने के लिए तीन श्रावन यानि तीन साल की अवधि की आवश्यकता है।

जिन किसानों के पास अपनी जमीन नहीं होती है, वे किसान दूसरों की जमीन पर आधीदारी में खेती करते हैं। आधीदारी में खेती करने वाले किसान अपनी उपज के आधा जमीन के मालिक को देते हैं। यदि उन किसानों के पास बैल भी नहीं है, तो वे बैल भी दूसरे व्यक्ति से धान या दूसरे फसल देने के समझोते पर खेती करने के लिए बैल लेते हैं। इस तरह अपने फसल के आधा फसल बैल के मालिक को देता है। इसका सजीव वर्णन डाक के वचनों में हुआ है। आधीदारी में खेती करना किसी भी किसान के लिए फायदेमंद नहीं है। डाक के अनुसार आधीदारी में खेती करने से अच्छा है कि दूसरों के घर में मजूरी करें। जैसे –

आधि माटि मरकीया हाल
ताक नकरि बहि थकाई भाल।[10]

असमिया में एक कहावत है – "जार नाई गरु, सि सवातोकै सरु" अर्थात जिनके पास बैल नहीं है, वे सबसे छोटे हैं। बैल ही एक किसान का सर्वस्व है। खेती करने के लिए सभी बैल उपयुक्त नहीं है। बैलों की उम्र बैलों की दंत पंक्ति देखकर ही गिनी जाती है। जिन बैलों के दो, चार या छह दाँत निकला है, वहीं बैल खेती के उपयुक्त है। हिरण का कान और जीभ वाले बैल ही खेती के लिए अच्छे माने जाते है। जिसका वर्णन डाक के वचनों में हुआ है। जैसे –

गरु किनिबा चिकुन जालि।
दुइ चारि छय दंतिया भालि।
छय दंताक भालेहे पाय।
सात दंताक देखि पलाय।
हरिनर दरे जिभाकान।
हेइ बलधिक बिचारि आन।।[11]

डाक के वचनों में बारिश की भी बात हुई है। डाक के वचनों में मौसम के बारे में भी पता चलता है। किस दिशा में बादल गरजने से बारिश होगी या किस दिशा में बिजली चमकने से बारिश नहीं होगी। इन विषयों पर भी डाक ने अपने वचनों में कहा है। असमिया लोकविश्वास के अनुसार बरसात के मौसम में उत्तर दिशा में बादल गरजने ने से बारिश आयेगी। इसलिए उस समय खेती से घर की ओर जाना चाहिए। दक्षिण दिशा में बादल गरजने से बारिश आने की संभावना कम है। पूर्व दिशा में बादल गरजने से बारिश की संभावना कम है, परंतु पश्चिम दिशा में बादल गरजने से बारिश के साथ-साथ औले भी गिर की

संभावना है। जैसे –

उत्तरे गाजिले मारिबा लर।
दक्षिने गाजिले मारिब खर।
पूवे गाजिले थाकिबा हुई।
पश्चिमे गाजिले थाकिबा हुई।[12]

असमिया समाज में घर निर्माण की एक अलग शैली है। किस दिशा में गृह का निर्माण करना चाहिए, अपने घर के चारों ओर क्या होना चाहिए आदि के विषय में भी डाक के वचनों में देखने को मिलता है। डाक वचनों के अनुसार घर की दक्षिण दिशा में खेती और उत्तर दिशा में पेड़-पौधे लगाना चाहिए। ताम्बुल के एक पेड़ से दूसरे पेड़ बीच छह हाथ की दूरी होनी चाहिए। ताम्बुल के साथ-साथ पान की भी खेति करनी चाहिए। डाक के अनुसार आषाढ़ महीने में दूसरे पेड़-पौधे नहीं लगाना चाहिए। ताम्बुल के किनारे आम और कटहल का पेड़ लगाना चाहिए।

असमिया समाज में लोकविश्वास है कि घर पूर्व और पश्चिम दिशा की ओर बनाना चाहिए। घर का दरवाजा दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए। क्योंकि इस तरह के घर में हमेशा धूप पड़ती है। घर की पूर्व दिशा में रसोईघर होना चाहिए । पश्चिम दिशा की ओर गोशाला बनाना चाहिए। उत्तर दिशा में ताम्बुल-पान की खेती करनी चाहिए। दक्षिण दिशा की ओर विश्राम घर बनाना चाहिए। इसका लिखित रूप डाक वचनों में मिलता है। जैसे –

पुवा-पश्चिमाकै साजिबा घर
अकाल मृत्युत नाहिके डर
पुवे धुँवा उत्तरे गुवा
दक्षिणे धलि पश्चिमे गलि।[13]

प्रत्येक समाज और संस्कृति में खाना बनाने की प्रक्रिया अलग होती है। चावल पकाने के नियम पर भी डाक ने अपने वचनों में कहा है। तीन भागों में एक भाग चावल तो दो भाग पानी देना चाहिए। जैसे –

बाह चिट चलिया काटि
आखा पानी करिबा जुति
पानी दिबा आखा पाति
लबा रांधनी खारर जुति
एगुण चाउल तिनिगुण पानी
चारिगुण जाल दिबा तानि
कानर उपर दिबा जाल
तेवेसे बुलिबा व्यंजन भाल।[14]

सामुद्रिक शास्त्र में स्त्री और पुरुषों के लक्षणों के बारे में उल्लेख मिलता है। सामुद्रिक शास्त्र में वर्णित स्त्री-पुरुषों के लक्षणों का वर्णन लोक में प्रचलित डाक वचनों में भी मिलता है। सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार जिन पुरुषों की आँखें लाल होती है तथा खाने के वक्त जो भी मिले स्वाद की ओर ध्यान दिए बिना खाता है। डाक वचनों के अनुसार उनके लक्षण अच्छे होते हैं। उदाहरण के लिए –

चकु लाल हिया खाल
सि पुरुषर लक्षण भाल
शाके शुकति भक्षण
सि पुरुष सुलक्षण।[15]

जो मृदूभाषी होती है, खर्च कम और जमा अधिक करने का प्रयास करती है। घर में सभी के साथ मिल-जुल कर रहती है। उन्हें ही समाज अच्छी बहु मानते है। डाक के वचनों में इनका वर्णन मिलता है। जैसे –

शाशुरित सुधि करे जत कर्म
सेइ नारी नछारे धर्म
करा-करि संचय धन
सदा मुखत मिष्ट वचन
सेहिसे नारी लक्ष्मी जाति।[16]

आज के समय में लोगों को पहचान पाना बहुत ही मुश्किल है। बाहर से शरीर को देखकर किसी के चरित्र के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। कर्म और आचार-व्यवहार से ही लोगों की सही पहचान हो सकती है। डाक के वचनों में भी लोगों के चरित्र और आचार-व्यवहारों के बारे में वर्णन मिलता है। डाक कहता है कि राजाओं की पहचान उनकी उदारता और दान-धर्म से होती है। वीरों की पहचान युद्ध में ही किया जा सकता है। घोड़े की पहचान घोड़े का कान से हो जाती है तो हाथी की पहचान केवल फान में ही किया जा सकता है। वह कहता है कि लोगों की सही पहचान उनके काम और चरित्र को देखने बाद ही की जा सकती है। इनका वर्णन डाक के वचनों में इस प्रकार हुआ है – रजाक चिनिबा दानत

बीरक चिनिबा रनत
घोराक चिनिबा कानत
हातीक चिनिबा फानत
तिरीक चिनिबा स्नानत
क्षुरक चिनिबा शानत।[17]

असमिया समाज में प्रचलित खाद्य पदार्थ में से

कौन सा खाद्य किस महीने में खाना चाहिए, इसका भी वर्णन डाक ने अपने वचनों में किया है। जैष्ठ महीने में अत्यधिक गर्मी पड़ती है। इसलिए गर्मी के मौसम में दही खाना चाहिए। श्रावन के महीने में मरापाट[18] के पात खाना चाहिए। अश्विन महीने में कैला खाना चाहिए। माघ महीने में उड़द की दाल को कड़ाई करके खाना चाहिए। उक्त बातों का वर्णन डाक के वचनों निम्नरूप में हुआ है। जैसे –

जेठत दै आहारत खै
शाउने मरापाट खाबागै
भादत उल आहिनत कल
कातित कचुत बढ़ाय बल
आघोणत खाबा चराई।[19]

निष्कर्ष : असमिया समाज और संस्कृति में डाक के वचनों का प्रभाव देख सकते है। असमिया ग्रामीण जीवन में डाक के वचनों का प्रभाव अतुलनीय है। हजार वर्षों से असमिया सामाज की व्यवहारिक नीति, रीति-रिवाज, विविध धारणाएँ आदि की आधारभूमि डाक वचन ही है। कृषि से लेकर जन्म-मृत्यु से संबंधित विविध लोकविश्वासों, परंपरा, रीति-रिवाजों में डाक के वचनों का ही प्रभाव है। आज भी असमिया समाज और संस्कृति में डाक वचन लोकप्रिय है। उसमें केवल लोकविश्वास ही नहीं है। उनके पीछे कोई न कोई कारण भी है। डाक वचनों का प्रभाव किसानों पर अधिक है। वे खेती शुरु करने से लेकर बैल की खरीदारी तक डाक के वचनों पर निर्भर रहते हैं। डाक के वचनों में आधीदारी किसानों की दूर्दशा तक का वर्णन मिलता है। कह सकते है कि डाक के वचनों में संपूर्ण असमिया समाज और संस्कृति का चित्रण है। डाक वचनों में सामान्य जनजीवन का ही चित्रण हुआ है, इसमें राजा-महाराजा के जीवन का कोई भी प्रभाव नहीं है। तिब्बती भाषा में डाक का अर्थ है ज्ञान। इस तरह डाक वचन का अर्थ हुआ ज्ञान वचन। और 'डाकार्णव ग्रंथ' का अर्थ हुआ ज्ञानसागर।

संदर्भ सूची :

1. असमिया लोक्साहित्यर रुपरेखा, लीला गोगोई, पृष्ठ – 16.
2. असमिया लोकसाहित्य, प्रह्लाद कुमार बरुआ, पृ- 59.
3. असमिया लोक्साहित्यर रुपरेखा, लीला गोगोई, पृष्ठ – 16.
4. असमिया लोकसाहित्य, प्रह्लाद कुमार बरुआ, पृ- 60.
5. वही, पृष्ठ – 61.
6. असमिया लोकसाहित्य, प्रह्लाद कुमार बरुआ, पृ- 61.
7. वही, पृष्ठ – 61.
8. वही, पृष्ठ – 61.
9. वही, पृष्ठ – 61.
10. वही, पृष्ठ – 63.
11. असमिया लोक्साहित्यर रुपरेखा, लीला गोगोई, पृष्ठ – 20.
12. असमिया लोकसाहित्य, प्रह्लाद कुमार बरुआ, पृ- 63.
13. असमिया लोकसाहित्य, प्रह्लाद कुमार बरुआ, पृ- 66.
14. वही, पृष्ठ – 66.
15. वही, पृष्ठ – 69.
16. असमिया लोकसाहित्य, प्रह्लाद कुमार बरुआ, पृ- 69.
17. वही, पृष्ठ – 70.
18. एक पौधा, जिससे रस्सी, थैला बगैरह बनाया जाता है ।
19. असमिया लोकसाहित्य, प्रह्लाद कुमार बरुआ, पृ- 70.

सहायक ग्रंथ सूची :

1. असमिया लोक साहित्य, प्रह्लाद कुमार बरुआ, असम साहित्य सभा, प्रथम संस्करण : 2001
2. असमर संस्कृति, डॉ. लीला गगोई, बनलता प्रकाशन, अष्टम संस्करण : 2011
3. असमिया साहित्यर समीक्षात्मक इतिवृत्त, डॉ. सत्येंद्रनाथ शर्मा, अरुणोदय प्रेस, नवम संस्करण : 2001
4. इंटरनेट

•